[श्री कोरटकर]

जिनके पास यह बड़ा भारी हथियार है । अगर हम छोटे हथियार रख सकते है, अगर हम तोप और बन्दूक रख सकते हैं तो फिर बड़े हथियार को भी अपने पास रखने में किसी तरह की भी कोई ऐसी चीज नहीं है जो कि सिद्धान्त के खिलाफ जाती हो । हमें चाहिए कि हम इसको तैयार करें और इसको तैयार करके इसके भेद को प्रकट कर दें । दूसरे देशों ने इसको गुप्त रखा है, हमें चाहिए कि इसको गुप्त न रखें, इसका ब्ल्यू प्रिंट दुनिया के सामने प्रकट कर दें कि यह हमारा ब्ल्यू प्रिंट है, टस्ट करने की कोई जरूरत नहीं है । जिन लोगों ने टैस्ट किया है वे इस ब्ल्यू प्रिंट को देख लें और उनको मालूम हो जायेगा कि हमने यह हथियार तैयार कर लिया है और इस समय यह हमारे पास है ।

हमारा सिद्धान्त सिर्फ इसी हद तक है कि इसको टैस्ट नहीं किया जायगा और दूसरे यह कि इसको किसी पर इस्तेमाल नहीं किया जायेगा । मै इस चीज को अपनी सरकार के सामने रखना चाहता हू । तीन चीजें इसमें कही गई हैं कि हम ऐटमिक बम नहीं बनायेंगे, उसको टैस्ट नहीं करेंगे और उसका इस्तेमाल नहीं करेंगे । उनमें से एक चीज जो कि पहली है उसको कर लेना चाहिए । अगर हम इसके लायक हो गये है तो उसको बना कर दुनिया के सामने अगर हम रख देंगे तो हम भी अपने देश की जनता का उत्साह बढ़ायेंगे और दूसरे देश के ऊपर भी इसका असर होगा कि भारत की एक ऐसा देश है कि जिसके पास यह हथियार मौजूद है । यही चीज मैं विस्तार से रखना चाहता था ।

अब एक लोकल बात छोटी सी है । वह भी मै सरकार के सामने रखना चाहता हूं। राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में यह भी बताया है कि एक चौथा लोहे का कारखाना खुलने वाला है जो कि चैक स्टेट गवर्नमेंट की मदद से हिन्दुस्तान में खोला जायेगा । उस कारखाने के लिए कौन सी जगह मुकर्रर की गई है उसके बारे में मुझे अभी कुछ ज्ञान नहीं है । मैं सरकार के सम्मुख उस सम्बन्ध म यह सुझाव देना चाहता हूं कि आंध्र देश में रामागुंडम सबसे उपयुक्त स्थान इसके लिए है जहां कि यह कारखाना खोला जा सकता है । पुरानी हैदराबाद की गवर्नमेंट ने उसकी पूरी जांच की थी और यह पाया था कि वहां लोहे की कच्ची धातु बड़े पमाने पर मौजूद है और सारे हिन्दुस्तान में यही एक जगह है जहां कच्चे लोहे के साथ साथ उसको लगने वाली चूने और कोयले की खानें २५ मील क दायरे के अन्दर हैं और इस वजह से इससे और अच्छा स्थान ऐसे कारखाने के लिए और कहीं नहीं हो सकता है ।

इसमें शक नहीं है कि लोहे की धातु जो वहां की है वह इतनी रिच नहीं है जितनी कि और जगहों पर मिलती है । वहां लोहा ४० परसेंट के परिमाण म मिलता है लेकिन उसक साथ ही साथ मैं सरकार के सामने यह चीज रखना चाहता हूं कि ४० परसेंट लोहा कोई कम नहीं होता है । आज यूरोप में जो लोह क बहुत बड़े कारखाने चल रहे हैं वहां भी लोह की मात्रा उससे बहुत अधिक नहीं होती ह । बड़ी चीज जो देखने की है वह यह है कि अगर ऐसे कारखाने के लिए कोई और जगह चुनी गई है तो फिर दुबारा उस पर गौर किया जाय और अगर नही चुनी गई है तो यह नोट कर लिया जाय कि रामागुंडम की जगह इस कारखाने के लिए सबसे बेहतर जगह होगी और वहां इस कारखाने को खोला जाय । इन चन्द शब्दों के साथ मै राष्ट्रपति को उनके अभिभाषण के लिए धन्यवाद देते हुए अपने भाषण को समाप्त करता हूं ।

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

THIRTEENTH REPORT

Shri Supakar (Sambalpur): I beg to move:

"That this House agrees with the Thirteenth Report of the

Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 13th February, 1958."

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That this House agrees with the Thirteenth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 13th February, 1958."

The motion was adopted.

RESOLUTION *RE*: APPOINTMENT OF A COMMITTEE TO REVIEW THE WORKING OF BANKS FOR THE PURPOSE OF NATIONALISATION

Mr. Deputy-Speaker: The House will now resume further discussion on the resolution moved by Shri Rameshwar Tantia on the 13th December, 1957, regarding the appointment of a committee to review the working of banks for the purpose of nationalisation. Out of two hours allotted for the discussion of the resolution, one minute has already been taken up and one hour and 59 minutes are left for its further discussion today. Shri Rameshwar Tantia may continue his speech.

Shri Rameshwar Tantia (Sikar): Sir, on the 13th December, 1957 when my resolution was taken up at the last minute, you were good enough to permit me to move the resolution before adjourning the House and suggested that I might continue my speech on the next occasion when this resolution is to be taken up.

Sir, I do not now desire to proceed with the resolution. I shall, therefore, be grateful, if you would kindly agree not to propose it to the House.

श्री बृजराज सिंह (फिरोजाबाद) : क्या हो गया ?

Mr. Deputy-Speaker: We need not probe into that.

यह तो उनकी मर्जी है । माननीय सदस्य की यह अपनी मर्जी है कि वह इसको आगे नहीं चलाना चाहते ।

Shri Prabhat Kar (Hooghly): He cannot withdraw it without the permission of the House.

Shri M. L. Dwivedi (Hamirpur): I want to know whether the hon. Member has moved it or not. I thought he was making a speech before moving it.

Shri Surendranath Dwivedi (Kendrapara): The House is in possession of the resolution.

Mr. Deputy-Speaker: It has not been proposed to the House. The mover of the Resolution has not concluded his speech. He says he does not want to proceed with it, and he has not finished his speech. There was a case only a few days ago. An hon. Member had moved the resolution, but he had not concluded his speech. But then he was absent on the next day when it was to be continued. In that case it was held that he had moved it because he had said what he had to say and he did not turn up the next day to continue it. But today the hon. Member who is to continue the speech is here, but he does not want to go on with the speech. He says he does not want to proceed further. In my opinion, the motion has not been placed before the House so far. But, to be on the safer side if the House desires, I will put it to the House whether he has the permission to withdraw the resolution.

Pandit Thakur Das Bhargava (Hissar): If the Chair has been pleased to say that the resolution has not been moved, what is there to be withdrawn or to be put to the vote of the House?

Mr. Deputy-Speaker: This was my opinion. But, as a precautionary measure, because there are some doubts..

Shri Tyagi (Dehra Dun): With a view to clarify the procedure for future also, I may submit that he might